रात्रिक्लास 2-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा या

अभी बच्चे सर्विस पर जाते हैं। अभी मुख्य है खड़ी बन्धन पर समझाना। खड़ी बन्धन कब जरूर हुआ है। जो फिर चला आ रहा है। यह है प्रतिज्ञा की निशानी। और है पवित्र बनने की निशानी। नहीं तो खड़ी बन्धन का कोई अर्थ ही नहीं निकलता। भक्ति है बिगर अर्थ। कोई अर्थ सिध नहीं होता। फायदा नहीं होता। अभी तुम राखी अर्थ सहित बांधते हो। तुमफायदा भी सुनाते हो। वह है कुल वंशावली। ब्राह्मण खड़ी बांधने जाते हैं। तुम सभी ब्राह्मणियां हो। अभी बाप कहते हैं पवित्र रहने की प्रतिज्ञा करो अपने साथ। अपवित्र को ही पवित्र बनाना है। आगे चल यह समझते जावेंगे। आखरीन पवित्रताकी स्थापना तो होनी ही है। तुम्हारा एकआबजेक्ट बहुत है समझाने का। 84 जन्मों का राज़ भी समझाना है। पहले2 जरूर 84 पुनर्जन्म इन ल0ना0 ने लिये होंगे। मनुष्य से देवता फिर देवता से मनुष्य जरूर बने होंगे। मनुष्यसे देवता बनने लिए पवित्र जरूर बनना पड़े। बच्चों के पास अभी ज्ञान के अस्त्र शस्त्र तो बहुत ही हैं। तुम्हारे सिवाय और कोई पास यह अस्त्र-शस्त्र है नहीं। यह अस्त्र शस्त्र सिर्फ यहां से मिलती है। और कहां से मिल न सके। ज्ञान तलवार ज्ञान कटारी ज्ञान खर्ग यह है। स्थूल हथियार आद नहीं है। देवियों को ज्ञान कटारी ज्ञान खर्ग दी है। देवियां भी तुम हो। सतयुग में यह बातें नहीं होती। बच्चों को समझानी भी देनी है। देवियों पास कोई और अस्त्र शस्त्रनहीं होते हैं। ज्ञान की ही अस्त्र शस्त्र हैं। जो ज्ञान सागर से मिली हुई है जिसमे सभी विकार खत्म हो जाते हैं। पवित्र रहने लिए कन्याओं को भी विघ्न सहन करनी पड़ती है। बच्चों का विचार सागर मथन चलना चाहिए। हम खड़ी पर क्या2 समझावेंगे। सर्विस पर जाने वालों का विचार सागर मथन चलेगा। बाकी किसका विचार चल न सके। बाप का परिचय देना तो बहुत ही सहज है। मनुष्य का सिजरा शुरू होता ही है प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारियों से। प्रजापिता यानि बेहद का रचयिता। तो समझाना भी है। ब्रह्मा को कहते ही हैं प्रजापिता। दिलवाला मंदिर पर भी तुम बहुत अच्छी रीत समझा सकते हो। खातरी होती है वह जड़ यह चैतन्य। मंदिर सभी भक्ति मार्ग में बनते हैं। दिलवाला मंदिर में भी समझाना बहुत सहज है। आदी देव बैठा है। ऊपर में स्वर्ग है राजयोग है। तो जरूर राजयोग की नालेज मिलती होंगी। नालेज फुल है ही एक बाप। और कोई को कहते नहीं। ज्ञान का सागर एक है तो और कोई में ज्ञान हो नहीं सकता। ज्ञान सदगति एक ही आकर करते हैं। यह चक्र मुख्य है। नीचे लिखा हुआ हो एक सेकण्ड में शिव परमात्मा से यह वरसा ले सकते हो। नई दुनिया बाप की रचते हैं। उनका नाम है शिव। यह सभी बिचार सागर मथन कर समझानाहै। तुम्हारी है रूहानी सेवा। जो सिखलाते हैं बाप। आत्माओं को परमात्मा बाप आकर सिखलाते हैं। जिसके लिए ही गायन है आत्मायें परमात्मा अलग रहे ... परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान और योग सिखलाते हैं। परन्तु भक्तिमार्ग से बड़ाही मुश्किल निकलते हैं। क्रिमनल लाई भी कब न होना चाहिए। छीछी ख्यालात न होनी चाहिए। तुम्हारा काम है मैसेन्ज देना। और तो कोई हट्टी नहीं है। एक ही हट्टी है जिससे विश्व की बादशाहीमिलती है पढ़ाई से। यह पाठशाला है। भगवानुवाच मैंतुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। तुम बच्चों को समझाना बहुत सहज है। ल0ना0 जोराज्य करते थे अब वह है कहां। नहीं तो 84 जन्म कौन लेंगे। मनुष्य से देवताबनते हैं। देवता से फिर मनुष्य बनते हैं। संगम पर ही देवता बनने पुरूषार्थ करते हैं। अपने कल्याण लिए जितना हो सके पुरूषार्थ करना है। युध के मैदान से कायर होकर नहीं भागना है। ऐसे बहुत जाते हैं। बच्चे समझते हैं ईश्वरीय सेवा करने से भविष्य उंच पद होगा। जन्म जन्मान्तर के पाप हैं उनको भस्म करने लिए याद की यात्रा पर रहना है। बाकी इस जन्म के पापों को देखा जावेगा। पहले वाला तो ठीक करो। इस एक जन्म का फिर भी सुनाते हो तो वह आधाकल्प हो जाता है। पहले जन्म जन्मान्तर के विकर्मों का ख्यालात जो है उनको खलास करना है। बहुत बड़ा बोझा है पहले उनका चिन्तन करना है। याद में रहे तो बोझा उतर जावेगा। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।